Teachers of Bihar

Reg.No. BR/2025/0487469

पद्यपंकज

बिहार के शिक्षकों द्वारा रचित

सितंबर 2026 | अंक 24

प्रेम प्रकृति जीवन समाज मानवता



ई-पत्रिका तक पहुँचने हेतु QR कोड को स्कैन करें

मासिक कविता संग्रह

टीचर्स ऑफ बिहार गीत

एम आर चिश्ती

चाँद तारों को साथ लाएंगे, हम बहारों को साथ लाएंगे।
जैसे आती नहीं नजर दुनिया, हम चलाएंगे ये हंसी दुनिया,
हौसले और अपनी मंजिल से,
सब नजारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

प्रेम की रोशनी जो बिखरेगी,
और प्रतिभा सबकी निखरेगी,
खींच लेंगे गगन से इंद्रधनुष
बहते धारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

हम हैं निर्माता अपने भारत के,
पूरे करते हैं सपने भारत के,
हम कलम के वही सिपाही हैं
जो हजारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

हमने माना, टीचर्स ऑफ बिहार, दीप ऐसा जलाएंगे इस बार,
हम नवाचारी शिक्षा की राह में
बेसहारों को साथ लाएँगे।
चाँद तारों को साथ लाएँगे...

पद्यपंकज काव्य संग्रह

अस्वीकरण

- पद्यपंकज मासिक पत्रिका जिसे टीचर्स ऑफ़ बिहार के तरफ़ से प्रकाशित किया जा रहा है। इस प्रकाशन में बिहार के शिक्षकों द्वारा स्वरचित कवितायें प्रकाशित हैं।
- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक का विक्रय नहीं किया जा सकता है। यह केवल पढ़ने के उद्देश्य से निःशुल्क उपलब्ध है।
- यह कविता 'Teachers of Bihar' की संपत्ति है। इसे किसी भी प्रकाशक या अन्य लेखक द्वारा उपयोग नहीं किया जा सकता है।
- पत्रिका के सभी लेख, चित्र और सामग्री के अधिकार लेखक और प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पत्रिका के किसी भाग को बिना पूर्व अनुमति के पुनः प्रकाशित या वितरित नहीं किया जा सकता है।

संपादक मंडल

संरक्षक

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (शिक्षा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

मार्गदर्शक

शिव कुमार
उत्क्रमित मध्य विद्यालय नारायणपुर,
बिक्रम, पटना

तकनीकी सहयोग

ई ० शिवेंद्र प्रकाश सुमन

संपादक

अनुपमा प्रियदर्शिनी
रा० उ० मध्य विद्यालय, दूधहन, रघुनाथपर, सिवान

लेखक टीम के प्रमुख

अमितेश कुमार
राजकीय बुनियादी विद्यालय रेपुरा प्रखंड सकरा जिला मुजफ्फरपुर
बिहार

सह-संपादक

मधु कुमारी
प्रा०वि०बाँधकट्टा
आजमनगर कटिहार

संरक्षक का संदेश



प्रिय साथियों,

बिहार के शिक्षकों द्वारा सृजित मासिक काव्य-संग्रह 'पद्यपंकज' का प्रत्येक अंक साहित्यिक संवेदनाओं, सृजनात्मक चिंतन और मानवीय मूल्यों का अनुपम संगम प्रस्तुत करता है। इसमें प्रकाशित प्रत्येक रचना केवल शब्दों का संयोजन मात्र नही, बल्कि रचनाकारों के अंतर्मन की अनुभूतियों, जीवन-दृष्टि, सामाजिक सरोकारों तथा सांस्कृतिक चेतना का सजीव प्रतिबिंब है। यह संग्रह न केवल सृजनशील शिक्षकों को साहित्यिक प्रतिभा को अभिव्यक्ति प्रदान करता है, बल्कि साहित्य के माध्यम से समाज में सकारात्मक विचारों और संवेदनशीलता का भी प्रसार करता है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'पद्यपंकज' प्रत्येक अंक के साथ निरंतर नए रचनाकारों को अपने साथ जोड़ते हुए विविध विषयों पर भावपूर्ण, मौलिक एवं उत्कृष्ट काव्य-रचनाओं का प्रकाशन कर रहा है। यह निरंतरता इस बात का प्रमाण है कि शिक्षकों के भीतर निहित साहित्य-साधना की ज्योति आज भी पूर्णसमर्पण और ऊर्जा के साथ प्रज्वलित है।

निस्संदेह, ये रचनाएँ पाठकों के हृदय में गहन संवेदनाओं का संचार करेंगी और उन्हें आत्मिक संतोष का अनुभव कराएँगी।

मैं इस अंक में अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति देने वाले सभी शिक्षक-कवियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। साथ ही, इस कृति के प्रकाशन में समर्पित भाव से योगदान देने वाले संपादकमंडल, सहयोगियों तथा समस्त पाठकों के प्रति भी अपनी हार्दिक शुभेच्छाएँ व्यक्त करता हूँ।

मेरी मंगलकामना है कि 'पद्यपंकज' इसी प्रकार साहित्य-साधना के इस पावन अभियान को निरंतर आगे बढ़ाता रहे, नई प्रतिभाओं को मंच प्रदान करता रहे तथा अपनी सृजनात्मक यात्रा के माध्यम से समाज में संवेदनशीलता, मानवीय मूल्यों और साहित्यिक चेतना का प्रकाश फैलाता रहे।

सभी रचनाकारों, पाठकों एवं साहित्य-प्रेमियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सादर,

चंदन श्रीवास्तव

डॉ० चन्दन श्रीवास्तव

सहायक आचार्य (शिक्षा),
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
एवं
शैक्षिक समन्वयक,
भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय,
भारत सरकार

शुभकामना संदेश



"पद्यपंकज" जैसी पत्रिका शिक्षकों की उस रचनात्मकता और सोच को सामने लाती है, जो अक्सर उनके पाठ्यक्रम और जिम्मेदारियों के बीच छिपी रह जाती है । यह जानकर बहुत खुशी हुई कि हमारे शिक्षकगण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच भी साहित्य और लेखन के प्रति इतनी संवेदनशीलता और समर्पण दिखा रहे हैं।

यह पत्रिका सिर्फ शब्दों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक जीवंत दस्तावेज़ है, जो शिक्षा, विचार और भावनाओं के मेल से बना है। इसमें छपी हर रचना, एक शिक्षक के अनुभव, उसकी सोच और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को दर्शाती है।

"पद्यपंकज" की पूरी टीम, संपादक मंडल और इसमें सहयोग देने वाले सभी शिक्षकों को मेरी ढेरों शुभकामनाएँ। उम्मीद करती हूँ कि यह प्रयास यूँ ही आगे बढ़ता रहे और नई पीढ़ी को एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करता रहे।

13/04/25

डॉ. रश्मि प्रभा

पूर्व संयुक्त निदेशक

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

शुभकामना संदेश



“पद्यपंकज” जैसी रचनात्मक पहल यह सिद्ध करती है कि शिक्षक न केवल ज्ञान के दीप प्रज्वलित करते हैं, बल्कि समाज की सांस्कृतिक चेतना को भी जीवंत बनाए रखते हैं। यह पत्रिका उन भावनाओं, विचारों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति है, जो शिक्षकों के हृदय में पलती हैं और साहित्य के रूप में साकार होती हैं।

ऐसी पत्रिकाएँ शिक्षा को केवल पुस्तकों की परिधि में नहीं बाँधतीं, बल्कि सोच, अभिव्यक्ति और संवेदना को विस्तार देती हैं। यह प्रशंसनीय है कि हमारे शिक्षक अपनी व्यस्त दिनचर्या के साथ-साथ सृजनात्मक साहित्य के माध्यम से समाज को दिशा देने का कार्य कर रहे हैं।

मैं “पद्यपंकज” पत्रिका से जुड़े सभी शिक्षकों, संपादक मंडल और रचनाकारों को इस पुनीत कार्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। यह पत्रिका निरंतर पल्लवित और पुष्पित होती रहे, यही मेरी कामना है।

डॉ. स्नेहाशीष दास

विभागाध्यक्ष,
विद्यालयी शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद, बिहार

संपादकीय



प्रिय साथियों,

सबसे पहले तो मैं क्षमाप्रार्थी हूँ जो इस अंक को आपके समक्ष लाने में काफ़ी विलंब हो गया। लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है की रचनाओं को पढ़ने के बाद आपकी सारी शिकायत दूर हो जाएगी। साथियों, हम सब जानते हैं कि शिक्षक केवल पढ़ाते ही नहीं, बल्कि अपने विचारों, अनुभवों और भावनाओं से समाज को एक नई दिशा भी देते हैं। उनकी लेखनी में जीवन की सच्चाइयाँ, समाज की झलक और बेहतर भविष्य के सपने दिखाई देते हैं। शिक्षकों की इसी प्रतिभा को मंच दे रही है टीचर्स ऑफ बिहार की मासिक ई-पत्रिका 'पद्यपंकज'।

'पद्यपंकज' बिहार के शिक्षकों की रचनाओं को पाठकों तक पहुँचाने का एक सुंदर प्रयास है। इसमें प्रकाशित कविताएँ, कहानियाँ, लेख और अन्य रचनाएँ शिक्षकों के विचारों और अनुभवों को शब्द देती हैं। यह पत्रिका नए रचनाकारों को आगे बढ़ने का अवसर देती है और उन्हें अपनी प्रतिभा पहचानने का हौसला भी देती है।

आज के डिजिटल दौर में 'पद्यपंकज' शिक्षकों को एक-दूसरे से जोड़ने और साहित्य के प्रति रुचि बढ़ाने का माध्यम बन रही है। इसकी यात्रा तभी और समृद्ध होगी, जब अधिक से अधिक शिक्षक अपनी रचनाओं के साथ इससे जुड़ेंगे और अपने विचारों को सबके साथ साझा करेंगे।

आइए, हम अपनी लेखनी के माध्यम से ज्ञान, संवेदना और सकारात्मक सोच का प्रसार करें। 'पद्यपंकज' केवल रचनाओं का संग्रह न बने, बल्कि बिहार के शिक्षकों की प्रतिभा, कल्पना और सृजनशीलता की पहचान बने।

इसी उम्मीद के साथ कि 'पद्यपंकज' का हर अंक नए विचारों, नई रचनाओं और नई संभावनाओं के साथ पाठकों तक पहुँचे तथा इसकी साहित्यिक यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहे।

आपकी प्रतिक्रिया के इंतज़ार में।

अनुपमा प्रियदर्शिनी

राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय दूधहन ,
ररघुनाथपुर, सीवान

अनुक्रमणिका

अब तो दीवारें बोलती है
नीरज कुमार झा 08

ऐ बच्चा, स्कूल जाओ
कार्तिक कुमार 09

एकता के रंग त्योहारों के संग
मो॰ साबिक 10

शिक्षा का महत्व
मृत्युंजय कुमार 11

उड़ान सपनों के
सुबाला कुमारी 12

गुरु की हुंकार
राकेश कुमार 13

भीड़ में जब खुद को खोया
आशीष आनंद 14

बीसवीं शताब्दी का बालक
उमेश कुमार सिन्हा 15

खुश होने के बाद सभी को रोना होता है
डॉ स्वराक्षी स्वरा 16

माँ की ममता
डॉ उषा किरण 17

हिंदी अपनी भाषा
संतोषी कुमारी 18

हिंदी हमारी शान है
प्रियंका कुमारी पाण्डेय.....19

धरती मइया के पुकार
सुनील कुमार प्रजापति 20

गिरिधर नागर तुम आओ
रूचिका..... 21

किताबों के सफो में मुस्कुराते बालपन
अफ़शां बेगम..... 22

दीप जलाना कब मना है
रत्ना प्रिया 23

ओजोन रानी सूर्य का
धर्मेंद्र कुमार ठाकुर..... 24

डरता हूं
पुरुषोत्तम कुमार 25

बेटियों से बदसलुकी
राहुल कुमार रंजन 26

जीवन तुम्हार
प्रशांत कुमार पिंटू 27

हमारे पथ प्रदर्शक
आशीष अम्बर.....28

अब तो दीवारें बोलती है



गायब हो गई गाँव की वो पगडंडियाँ, जो सीधे स्कूल को जाती।
वसंती बयार एक नई ऊर्जा लिए हमें कर्तव्य पथ पर अग्रसर करती।
तरु झूमकर हमारा अभिवादन करते।
मन मोर-सा- नर्तन करने को कहता।

सरसों के खेत में लगी अलसी चार चाँद लगाती।
प्रकृति की वो सुन्दरता अब देखते नहीं बनती।
अब तो दीवारें बोलतीं हैं।
फाल्गुन की वो उमंग,
जब अनंग मधु लेकर आता।

जेठ-बैशाख में दिन आम्र वृक्ष के नीचे गुजर जाता।
सजीला सावन हरियाली लिए मंद-मंद मुस्काता।
इंसान तो नहीं, रास्ता पानी पानी हो जाता।
प्रकृति की वो सुन्दरता अब देखते नहीं बनती।
अब तो दीवारें बोलतीं हैं।

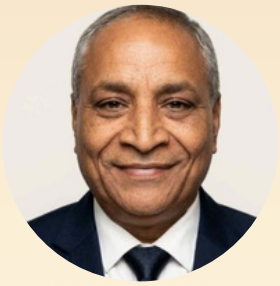
पाहुन जब गाँव में शहर से आते,
पड़ोसियों का भी मन उमंग से भर उठता।
कभी चाची मीठी खीर दे जाती,
कभी पड़ोसी रामू मेहमानों का दिल बहलाता।

आगे-आगे नाचती किशोरी जामाता के आने की सूचना देती।
सुख -दुख बाँटने को भी कोई तैयार हो जाता।
इंसान तो क्या, पड़ोसी भी अब बात नहीं करते ।
अब तो दीवारें बोलतीं हैं।

नीरज कुमार झा
उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय
भवानीपुर, नारायणपुर, भागलपुर

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

ऐ बच्चा, स्कूल जाओ



ऐ बच्चा, स्कूल जाओ, ज्ञान की ज्योति जलाओ।
सुबह उठकर माता-पिता को, प्रणाम कर आशीर्वाद पाओ।
नित्य करो तुम आसन-प्राणायाम, तन-मन स्वस्थ बनाओ।

शांत चित्त से ध्यान लगाकर, मन में शांति लाओ।
स्वर्वेद रोज पढ़कर बच्चा, सुंदर चरित्र बनाओ।
सत्य, प्रेम और सदाचार से, जीवन सफल बनाओ।

गुरुजनों का मान करो तुम, उनसे ज्ञान कमाओ।
मिल-जुलकर सब साथ रहो, प्रेम का दीप जलाओ।
विद्यालय को मंदिर मानो, रोज समय पर जाओ।

पढ़-लिखकर अपने जीवन में, ऊँचा लक्ष्य बनाओ।
एक पौधा हर बच्चा रोपे, धरती को हरियाली दो।

पेड़-पौधों की सेवा करके, प्रकृति को खुशहाली दो।
जल बचाओ, वृक्ष बचाओ, पर्यावरण सजाओ।
स्वच्छ हवा और स्वच्छ धरा का, सुंदर जग बनाओ।

बड़ों का सम्मान करो, छोटों से स्नेह जताओ।
मेहनत, सेवा और संस्कारों से, अपना नाम कमाओ।
योग, ध्यान और स्वर्वेद से, जीवन को महकाओ।

ऐ बच्चा, स्कूल जाओ, संस्कारों से देश सजाओ।

कार्तिक कुमार
मध्य विद्यालय कटरमाला
गोरौल, जिला–वैशाली, बिहार

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

एकता के रंग त्योहारों के संग



धर्मो की रक्षा करे
संस्कृतियों के साथ चले
आपसी समन्वय बनी रहे
मिलजुल कर फले-फूलें।

परंपराओं का संरक्षण करे
भाईचारा को मजबूत करे
बुराई को दूर करे
मूल्यों का सम्मान करे।

पीढ़ियों को याद करे
विचारों का आदान-प्रदान करे
मतभेदों को भूलाकर,
नई ऊर्जा का संचार करे।

पीढ़ियां हमें सिखाती है
सबक हमें यह दे जाती है
मिलजुल कर साथ रहें
कभी ना आपस में लड़ें।

विरासत को संभाले रहे
सुख-दुख हमेशा साथ चले
संस्कृति के साथ रहे
कभी ना इससे बैर करे ।

लोगों को रोजगार दे
व्यवसायों को वरदान दे
अर्थव्यवस्था को मजबूत करे
देश की तरक्की में योगदान करे ।।

मो॰ साबिक
पीएम श्री उच्च विद्यालय मोखलिसपुर,
बंजरिया , पूर्वी चंपारण।

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

शिक्षा का महत्व



आओ मिलकर दीप जलाएं,
शिक्षा की हम अलख जगाएं।

विद्यालय में रोज जाना है,
बच्चों को खूब पढ़ाना है।

अपना फर्ज निभाना है,
शिक्षा को आगे बढ़ाना है।

हम सब ने यह ठाना है,
शिक्षा के क्षेत्र में बिहार को आगे बढ़ाना है।

नटखट बच्चे प्यारे बच्चे,
दिल के होते हैं ये सच्चे।

हम शिक्षक आगे आएंगे,
शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को आगे बढ़ाएंगे।

बच्चों के साथ हम खेलेंगे,
उनकी शरारत हम झेलेंगे।

आओ मिलकर हांथ बढ़ाएं,
बच्चों के भविष्य को सुनहरा बनाएं।

मृत्युंजय कुमार
NPS खुटौना यादव टोला
पताही, पूर्वी चंपारण

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

उड़ान सपनों के



मेरे प्यारे बच्चों, आज कुछ नया सीखते हैं,
धमा-चौकड़ी की बातों से हटकर
नवाचारी शिक्षा का इतिहास रचते हैं।
हम सब कुछ कदम साथ-साथ चलते हैं।

कुछ अनबूझ पहेली, कुछ चुटकुले
और कुछ रोचक तथ्यों को जोड़ते हैं।
कुछ ज्ञान-विज्ञान की गुप्त बातें
और कुछ हास्य-व्यंग्य की बातें बोलते हैं।

आइए अब वर्ग कक्ष की ओर बढ़ते हैं,
एक नई कहानी के साथ अध्याय को जोड़ते हैं।
कभी भीमराव अंबेडकर की जाति-प्रथा
और कभी दहेज की कुरीतियों से
भगजोगनी के अध्याय को जोड़ते हैं।

आइए अब अल्पाहार की प्रतीक्षा करते हैं,
रंग-बिरंगे व्यंजनों से रसपान करते हैं।
खेल की घंटी का भी अब इंतज़ार करते हैं,
समयानुसार छुट्टी की घंटी की आवाज़ सुनते हैं।
खुश होकर राष्ट्रभक्ति के लिए राष्ट्रगान को गाते हैं।

देशभक्ति के वास्ते वतन पर डटते हैं,
ग्राम-वासिनी माँ भारती के चरण पर
निज प्राण व मस्तक को रखते हैं।
मेरे प्यारे बच्चों, आइए हम सब मिलकर
यूँ ही साथ-साथ आगे बढ़ते हैं।

सुबाला कुमारी
उ० उ० म० विद्यालय बिशनपुर,
जिच्छो, गोराडीह, भागलपुर

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

गुरु की हुंकार



गुरु ज्ञान का दीप जले,
भारत का तम दूर चले।
कक्षा फिर से मुक्त बने,
बालक में विश्वास जगे।
गुरु केवल आदेश नहीं,
वह केवल कर्मचारी नहीं।
उसके हाथों कल है देश,
उससे बढ़कर धर्म नहीं।
कागज का यह भार घटे,
कक्षा का अधिकार बढ़े।
फाइल, पोर्टल दूर रहें,
ज्ञान-दीप हर ओर जले।
नीति-भवन के नीतिज्ञो,
सुन लो भारत की पुकार।
देश चलाना खेल नहीं,
जनता का है यह अधिकार।
सत्ता पाकर मत भूलो,
ज्ञान-विवेक को साथ रखो।
समाज-विधि का मर्म पढ़ो,
जनहित को सर्वोपरि रखो।
संविधान का मान रहे,
लोकतंत्र बलवान रहे।
नीति बने प्रमाणों पर,
देशहित ही प्रधान रहे।
विशेषज्ञ की बात सुनो,
जनता का आघात सुनो।
कृषक, श्रमिक, गुरु, विज्ञान—
सबमें देखो हिंदुस्तान।
नीति वही जो खेत चले,
नीति वही जो गांव पले।
नीति वही जो जन को छूए,
नीति वही जो देश उठाए।

नीति वही जो गांव पले।
नीति वही जो जन को छूए,
नीति वही जो देश उठाए।
नारे से निर्माण नहीं,
भाषण से उत्थान नहीं।
श्रम से ही संसार बने,
सत्य से सम्मान बने।
गुरु को उसका कर्म मिले,
शिक्षा को फिर धर्म मिले।
बालक प्रश्न उठाता जाए,
भारत आगे बढ़ता जाए।
गुरु भयमुक्त, कक्षा मुक्त,
ज्ञान रहे हर बंधन-मुक्त।
प्रश्न जगे, विवेक जगे,
सोया भारत फिर से जगे।
पद तो आते-जाते हैं,
काल सभी को खाते हैं।
राष्ट्र रहे चिरकाल अटल,
यही हमारा धर्म सफल।
कागज घटे, कक्षा बढ़े,
आदेश घटे, विश्वास बढ़े।
नीति में हो राष्ट्र प्रथम,
शिक्षक को फिर मिले गरिमा।
गुरु जगे तो देश जगे,
ज्ञान जगे तो तेज जगे।
कक्षा-कक्षा दीप जले,
भारत का नवयुग फिर पले।
उठो, समय की मांग यही—
गुरु का फिर सम्मान रहे।
ज्ञान-विवेक बने आधार,
भारत फिर महान रहे।

राकेश कुमार
विज्ञान शिक्षक,
मध्य विद्यालय, अमौना।

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

भीड़ में जब खुद को खोया



भीड़ में जब खुद को खोया,
तुमने चुपके से मुझे खोज लिया।

हाथ मेरा तुमने नहीं थामा,
बस मन को चलना सिखा दिया।

न धन माँगूँ, न कोई वरदान,
बस इतना साथ निभाना—

जब दुनिया समझ न पाए मुझे,
तब तुम मेरे मन को समझ जाना।

कान्हा, तुम मंदिर में कम,
मेरी साँसों में ज़्यादा मिलते हो।

आशीष आनंद
पीएम श्री भागीरथ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, निर्मली, पिपरा, सुपौल

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

बीसवीं शताब्दी का बालक



बीसवीं शताब्दी का था मैं बालक।
स्कूल में जाना पड़ता था बैलगाड़ी से।
दूर-दराज़ स्कूल था, मेरे पास भाड़ा नहीं रहता था।
सुन बैलों के तरन की आवाज़, कान खड़े हो जाते।

गाड़ीवान बोलता—
“तेज़ चल, मेरे बंधु! चलना है दूर-दराज़।”
पुस्तक लिए झोले में, लटक जाते बैलगाड़ी पर।
कुछ दूर तक मस्ती करते, उस बैलगाड़ी पर बड़े
आराम से।

फिर टप-टप आवाज़ें आतीं;
हिनहिनाते, गर्दन ताने,
धूल उड़ाता, वेग से चलता वह घोटक महान।
भेड़-बकरियाँ रास्ता घेर लेतीं;
मेमना करता नाटक महान।

छोटे-छोटे जंतुओं से खेलते, होते आनंदित हम।
रास्ते में लड़के गिल्ली-डंडा खेलते;
ठिठक जाते मेरे पैर।
कहीं पतंग की लड़ाई हो जाती,
कटकर छू लेती गगन को।

पीछे भागती बालकों की टोली।
फिर स्कूल की कक्षा करके,
शाम को घर लौट आते।
पता ही नहीं चलता,
रास्तों में कब स्कूल आया और कब घर।

काका, चाचा, भैया, बाबा,
काकी, चाची, भौजी, दादी—
सभी से रिश्ते जोड़कर बातें करते।
बदले में “बेटा”, “बबुआ” आदि
प्रेम की भाषा सुनते।

चिट्ठी लिखवाने जब आतीं काकी और दादी,
चिट्ठी लिखवाकर जब मुझे शाबाशी देतीं,
तो मन गदगद हो जाता।
जब डाकिया को देने को कहतीं,
बड़ी खुशी से पोस्ट ऑफिस जाते।
लिफाफा, पोस्टकार्ड और अंतर्देशीय पत्र पाते।

मोबाइल ने बंद करवा दी चिट्ठी-पत्री।
अब मोबाइल ने सबको अपना दास-दासी बना दिया है।
सार्थक उपयोग कोई नहीं करता;
बस मोबाइल से चिपका रहता है।

सारे गृहकार्य छुड़वा देता है,
बड़े-बुजुर्गों को दुख पहुँचाता है।
जो इसका सार्थक उपयोग नहीं करते,
वे अपने जीवन को स्वयं धोखा देते हैं।

उमेश कुमार सिन्हा निर्देशक
डिसेंट एकैडमी वाया स्कूल रघुनाथपुर
अंचल – ब्रह्मपुर ,जिला – बक्सर

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

खुश होने के बाद सभी को रोना होता है



खुश होने के बाद सभी को रोना होता है
वो ही होता है पगले! जो होना होता है।।

स्नेह दीप मानव की पूंजी, इसको सदा जलाना
अंतर्मन के भीतर देखो, विष को नहीं बसाना
पुष्प की खातिर बीज पुष्प के बोना होता है।।

माना उलझन भरी पड़ी है, पर तुम मत घबराना
अपनी शक्ति जान के बंधु, अपने पांव बढ़ाना

कुछ पाने की खातिर कुछ तो खोना होता है ।।
जिस कंधे पर सिर रखोगे, वो ही काट गिराएगा
सीधे रस्ते से भटकाकर, गलत राह बतलाएगा
बोझ स्वयं का स्वयं के कंधे ढोना होता है।

डॉ स्वराक्षी स्वरा
खगड़िया, बिहार

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

माँ की ममता



अक्षर–अक्षर बाँध सके,
नहीं कोई है ऐसी भाषा!
व्यक्त करे माँ की ममता को,
ऐसी कोई नहीं परिभाषा!

एक अलौकिक भाव है ममता,
जैसे ईश्वर का निज रूप।
होकर स्वयं पर न्योछावर जिसने,
हो रच डाले भाव अनूप।

पीयूष स्रोत बहती कल–कल में,
लिए हृदय में ममता धार।
कर न्योछावर निज ममत्व,
संवारती सरिता धरा रूप अपार।

संतानों के हित स्वयं अवनि,
चादर ममता की ओढ़े रहती।
सहती हृदय पर वज्र प्रहार,
क्या कभी 'उफ' भी है करती?

तिल-तिल मरकर पोषण करती,
सींचती रक्त से नौ माह!
जन्म मनुज को देती वह,
पाती बदले में है बस आह!

देवों ने भी जिस ममता का,
कर्ज उतार नहीं पाए ।
सुन! मानव माँ की ममता का,
काश! तुम्हें तनिक भी समझ आए !!

डॉ उषा किरण
प्रधान शिक्षक
Nps बवरिया, पहाड़पुर, पूर्वी चम्पारण

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

हिंदी अपनी भाषा



हिन्द देश के वासी हैं हम, हिंदी अपनी भाषा।
है हिंदी अपनी भाषा, तुम करना गौर जरा सा,
कुछ करना गौर जरा सा, है हिंदी अपनी भाषा।।

सरल इतनी कि शब्दों से बयां सब अर्थ हो जाए,
सुलभ इतनी किसी भाषा से मिल नव अर्थ ले आए।

मौन साहित्य मन की भावना में मौज भर देती,
कविताएं हृदयपट पर खुमारी बन के छा जाए।
जितना सीखो उतनी बढ़ती जाती है जिज्ञासा,
हिन्द देश के वासी हैं हम, हिंदी अपनी भाषा।।

एक बात को सौ ढंग से शृंगारित कर बतलाना,
कड़वी बातों में भी भावों के एहसास मिलाना।

और कभी अपने दामन में व्यंग्य के रंग समेटे,
हिंदी आसाँ कर देती है हंसना और हंसाना।
कवियों को मिलती सच्ची अनुभूति की परिभाषा
हिन्द देश के वासी हैं हम, हिंदी अपनी भाषा।।

संतोषी कुमारी
विद्यालय अध्यापिका
उत्क्रमित मध्य विद्यालय,
जगवन कटैया, बिस्फी, मधुबनी

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

हिंदी हमारी शान है



संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश हिंदी,
कई चरणों में विकास है।

हिंद की भाषा हिंदी,
हिंदी हमारी शान है।

सरल ,सहज भाषा हिंदी,
समझना आसान है।
हिंद की भाषा हिंदी
हिंदी हमारी शान है।

भाषाओं की जननी है ,
राष्ट्र की पहचान है।
हिंद की भाषा हिंदी,
हिंदी हमारी शान है।

समृद्ध शब्द भंडार है ,
गौरवशाली इतिहास है।
हिंदी की भाषा हिंदी ,

हिंदी हमारी शान है ।
लिपि देवनागरी है ,
बोलियों की भरमार है।

हिंदी की भाषा हिंदी ,
हिंदी हमारी शान है।
भावना प्रधान है

साहित्य, समृद्ध खान है।
हिंद की भाषा हिंदी,
हिंदी हमारी शान है।

नाटक ,निबंध ,जीवनी में,
महत्वपूर्ण योगदान है ।
हिंद की भाषा हिंदी ,
हिंदी हमारी शान है ।

हर भाषा अपनाने की,
व्यापक क्षमता विद्यमान है
हिंद की भाषा हिंदी ,
हिंदी हमारी शान है।

संवेदना, संस्कृति से जुड़ी,
हर भाषा से लगाव है।
हिंद की भाषा हिंदी,
हिंदी हमारी शान है।

प्रियंका कुमारी पाण्डेय
प्रा॰वि॰ तारानरहवॉ (बालक)
कुचायकोट, गोपालगंज

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें



धरती मइया के पुकार

धरती मइया पुकारे हई, सुनऽ हो मनई के लाल,
हरियर-हरियर जंगल बचइहऽ, मत करऽ इनकर हाल।
नदिया, पोखर, आहर-पइन, सभे हमर अनमोल,
इनकर निर्मल जल में बसऽ हे, जीवन के मीठ बोल।

पेड़-पौधा हई धरती के, साँचो अनमोल गहना,
इनका बिना बतावऽ भइया, जिनगी के का रहना?
पीपर, बरगद, नीम लगइबऽ, आम-अमरूद के बाग,
चिरई-चुरगुन गीत सुनइहें, दूर होई सब लाग।

कटत पेड़ के देख के, मनवा हो जाला उदास,
छाँह कहाँ से पइबऽ भइया, जब ना बचत वनवास?
आज लगइबऽ नन्हक पौधा, काल्हि बनी दरख्त,
पीढ़ी-दर-पीढ़ी छाँह देई, ई हमनी के कर्तव्य।

नदिया में कचरा मत फेंकऽ, पोखर मत करऽ गंदा,
जल हई जीवन के आधार, जल बिन जीवन मंदा।
बूँद-बूँद के मोल समझऽ, पानी खूब बचइबऽ,
बरखा के पानी रोक-रोक के, धरती के प्यास बुझइबऽ।

धुआँ-धूल से हवा बिगड़ल, साँस-साँस में पीरा,
साफ हवा खातिर अब तऽ, बदलऽ अपना तरीका।
साइकिल चलइबऽ, पेड़ लगइबऽ, कम करबऽ धुआँ,
स्वच्छ हवा जब साँस में आई, खिल उठी सबकी मुँहा।

धुआँ-धूल से हवा बिगड़ल, साँस-साँस में पीरा,
साफ हवा खातिर अब तऽ, बदलऽ अपना तरीका।
साइकिल चलइबऽ, पेड़ लगइबऽ, कम करबऽ धुआँ,
स्वच्छ हवा जब साँस में आई, खिल उठी सबकी मुँहा।

प्लास्टिक के थैली छोड़ऽ, कपड़ा के थैला लऽ,
कचरा जहाँ-तहाँ मत फेंकऽ, डिब्बा में डालऽ भइया।
गीला-सूखा कचरा अलग करऽ, ई आदत खूब बनावऽ,
अपना घर से शुरू करीं, गाँव-टोला चमकावऽ।

धरती खाली खेत न हई, धरती माई हई हमार,
माटी, पानी, पेड़-पखेरू—सभे पर हक समान।
चिरई के दाना-पानी देबऽ, जीव-जंतु के बचइबऽ,
प्रकृति के हर रूप के अब, अपना मान समझइबऽ।

बच्चा-बच्चा हाथ बढ़ावऽ, शिक्षक दे संदेश,
हरियाली से सुंदर होई, अपना गाँव-प्रदेश।
एक पौधा अपने नाम के, एक पौधा माई के,
एक पौधा उन वीरन खातिर, जे गइलें देश बचाई के।

आओ मिलके शपथ उठइबऽ, धरती रखबऽ सँवार,
जल-जंगल-जमीन बचइबऽ, ईहे साँचो प्यार।
आज नन्हक बीज बचइबऽ, काल्हि बने संसार,
धरती के हरियाली खातिर, बनऽ प्रकृति-प्रहरी हमार!

पेड़ बचावऽ — पानी बचावऽ,
जीवन के मुस्कान बचावऽ।
धरती मइया के मान बढ़ावऽ,
आवऽ मिलके प्रकृति बचावऽ!

सुनील कुमार प्रजापति
नव. प्रा. विद्यालय इमामगंज, ओबरा,
औरंगाबाद, बिहार

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

गिरिधर नागर तुम आओ



जब जब मुसीबतें धरा पर आईं
कृष्ण तुम्हारी सुधि हमें आई
आज संकट है इस धरा पर आया
नफरतों का घना कोहरा हर मन पर छाया।

मुरलीधर तुम आओ
प्रेम का पाठ तुम जगत को एक बार पढ़ाओ।
एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ है,
दूसरे को गिरा बढ़ते रहने की दौड़ है।
स्वार्थपरता हो रही है हर तरफ हावी,
सहयोग नही कही दिख रहा प्रभावी
गिरधरनागर तुम आओ
मित्रता का पाठ तुम फिर सबको ही पढ़ाओ।

हिंसा का बढ़ रहा प्रकोप है,
मूक जानवरों पर चलता सब जोर है,
पशुओं की सेवा और सुरक्षा का इंतजाम नही
बस मतलब पर फिक्र का जोश है।

बाँके बिहारी तुम आओ
गौ प्रेम और गौ सेवा का मंत्र जनमानस में भर जाओ
चंचलता और मासूमियत खो रही,
मुश्किल में देखो बचपन भी अब हो रही,
अब कहाँ दिखती है सरलता बचपन की
तकनीकी युग है और दिखावटें कैसे ढो रही,

नन्दलाला तुम आओ
बचपन की मासूमियत और सरलता को बचाओ।

रूचिका
राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय तेनुआ
गुठनी सिवान बिहार

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

किताबों के सफो में मुस्कुराते बालपन



किताबों के सफो में मुस्कुराते बालपन देखें।
चलो स्कूल चलकर आज बच्चों का चमन देखें।

सुबह की धूप सी चहकन, दुवाओं जैसी पाकीज़गी देखें।
हँसी चेहरों पे हम, बिखरा हुआ मासूम फ़न देखें।

घंटी की सदा पर दौड़ते नन्हें से वो कदम देखें।
वो झूठे रूठने- मनाने का हम बचपन देखें।

कभी काग़ज़ की कश्ती है, कभी सपनों के पतंगें देखें।
इन्ही डालियों में उड़ता हुआ हम एक गगन देखें।

अध्यापकों की सीख और बच्चों की नटखट अदा देखें।
मोहब्बत और तहज़ीब का अफ़्शा ख़ूबसूरत यह संगम देखें।

अफ़शां बेगम
उर्दू प्राइमरी स्कूल करवंदिया
चाँद- कैमूर, बिहार

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

दीप जलाना कब मना है



लाख अँधेरा हो जीवन में, दीप जलाना कब मना है
राहों में कांटों को चुनकर, फूल खिलाना कब मना है

जीवन में रस सूख गए हों, हो स्नेह का धार बहाना
मन के शुष्क धरातल पर हो, हरे-भरे पौधे विकसाना
नवीन विचारों को सींचकर, वृक्ष बनाना कब मना है।
लाख अँधेरा हो जीवन में, दीप जलाना कब मना है।

संकट के हों बादल छाये, निराशा की उष्ण तपिश हो
हो ध्येय पर ध्यान निरंतर भटकावों पर निज बंदिश हो
उग्र तूफानों को चीरकर, बढ़ते जाना कब मना है।
लाख अँधेरा हो जीवन में, दीप जलाना कब मना है।

सारे सपने टूट गए हों, सुप्त हो मन की अभिलाषा
आशा की इक चिंगारी को, पल-पल पलती हो जिज्ञासा
उस स्फूर्ति को ढाल बनकर, राह बनाना कब मना है।
लाख अँधेरा हो जीवन में, दीप जलाना कब मना है।

अति विवश व लाचारों को, दु:ख-संकट में बने सहारा
डूबते व उतराते को मिल, जाए एक सुखद किनारा
निज स्वार्थ से ऊपर उठकर, हाथ बढ़ाना कब मना है।
लाख अँधेरा हो जीवन में, दीप जलाना कब मना है।

राह नई बनाने वाले इस जग में नाम कमाते हैं
चुनौतियों का डट करें सामना निर्भय बढ़ते जाते हैं
मन में साहस, हिम्मत रखकर, मंजिल पाना कब मना है।
लाख अँधेरा हो जीवन में, दीप जलाना कब मना है।

रत्ना प्रिया – शिक्षिका, हिन्दी
उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोपुर
चंडी ,नालंदा

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

ओजोन रानी सूर्य का



ओजोन दिवस पर ओजोन रानी और सूर्य का तांडव
नीले अंबर के सिंहासन पर, सजी हुई है एक कहानी,
वायुमंडल के महलों में रहती है ओजोन रानी।

अनंत ब्रह्मांड के बीच चमकता, सूर्य देव का तेज प्रचंड,
धरती मां का वो राजा है, जिसका वैभव अमित-अखंड।

पर उस राजा के गुस्से से, एक प्रलयंकारी आग निकलती,
पराबैंगनी किरणों के रूप में, एक घातक तलवार है चलती।

अगर पहुंच जाए वो धरती पर, तो हाहाकार मच जाता है,
मानव का सुंदर तन-मन, पल भर में झुलस जाता है।

त्वचा का कैंसर, भीषण रोग, और सनबर्न का वो संताप,
आंखों की रोशनी छीन लेता, ये किरणों का भयानक पाप।

भीतर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को पल में यह हर लेती,
हंसती-खेलती सुंदर धरती को, मरुस्थल ये कर देती।

पर घबराओ मत! अंबर में एक महायोद्धा तना खड़ा है,
इन कातिल संहारक किरणों से, सदियों से वह लड़ा है।

ढाल बनी मां की ममता सी, प्रहरी बन ओजोन खड़ी है,
धरती को जीवन देने की, उसकी ही ये जिद बड़ी है।

धर्मेंद्र कुमार ठाकुर
प्राथमिक विद्यालय रेही टोला

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

डरता हूं



बेटी, तुझे पाने से डरता था।
आज पाकर खो जाने से डरता हूं।
कल तक तेरा बोझ उठाने से डरता था,

आज खुद तेरा बोझ बन जाने से डरता हूं।
मैं सोया रहा तू जागी रही,
आज मैं सो जाने से
डरता हूं।

करती थी मेरा इंतजार घर आने का तू कल तक,
आज तेरे घर से बाहर जाने से डरता हूं।

दी तूने मुझे खुशियां अपार,
आज तेरी खुशियों के खो जाने से डरता हूं।

तेरे फूल से कोमल मुखड़े को देख मैं मुस्काता था,
आज उस फूल के मुरझाने से डरता हूं।

तूने अपनी मुस्कुराहट से मेरी बगिया सजाई है,
आज तेरी बगिया के उजड़ जाने से डरता हूं।

सोचा था स्वयंवर रचाएंगे तेरे लिए,
उस स्वयंवर में रावण के आ जाने से डरता हूं ।

आज नहीं है कोई लक्ष्मण जो खींचे तेरे लिए लक्ष्मण रेखा,
राम के न रहने पे लक्ष्मण के आ जाने से डरता हूं।

तूने तो अपना धर्म निभा दिया, अपना धर्म न निभाने से डरता हूं।
कल तक तुझे पाने से डरता था, आज पाकर खो जाने से डरता हूं।

पुरुषोत्तम कुमार
उर्दू प्राथमिक विद्यालय लोदीपुर
गोलघर अंचल पटना

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

बेटियों से बदसलुकी



बेटी को कमजोर समझना,
ये कैसी सोच हमारी है?
जिसके आने से घर महके,
वही क्यों आज बेचारी है?

बेटी भी इंसान है आखिर,
उसके भी अरमान हैं।
उसकी हँसी न छीनी जाए,
उसके भी सम्मान हैं।

जो हाथ उसे सहलाने थे,
वो हाथ न उसको डराएँ।
जो होंठ दुआ देते थे,
वो उसको गाली न सुनाएँ।

बेटी बोझ नहीं, अभिमान है,
बेटी घर की शान है।
उसकी इज़्ज़त की रक्षा करना,
हर इंसान का फर्ज़ महान है।

बदसलुकी को चुप मत सहना,
आवाज़ उठानी होगी।
बेटियों के सुरक्षित कल की,
नींव आज बनानी होगी।

जिस दिन बेटी बेखौफ चलेगी,
उस दिन सच्ची जीत हमारी होगी।
बेटी के सम्मान से ही तो,
समृद्ध और सुंदर दुनिया हमारी होगी।

राहुल कुमार रंजन
प्रधानाध्यापक
मध्य विद्यालय ओरलाहा

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें

जीवन तुम्हारा



ये रंग तुम्हारा, संग तुम्हारा, ये पूरा प्रसंग तुम्हारा,
जीत हो या हो अब हार, होगी ना ये जंग दुबारा।

जल्द उठो तुम करो प्रयास, अपने ऊपर पूर्ण विश्वास
ख़ुद से ही खुद बात करो, न सुनो जग का उपहास।

तेरा यूं सहसा गिरना ही तेरे शत्रु की ताक़त है
गिरना संभलकर उठ जाना, ये वक्त की हिमाकत है।

ठिठक जाना यूं चलते चलते फिर पीछे तेरा मुड़ जाना
सही नहीं है बाधाओं से ऐसे तेरा घबराना।

यह जीवन एक संघर्ष है, युग पुरुष ने भी मानी है
यह जग जीता है उसने जिसने लड़ने की ठानी है।

लक्ष्य तुम्हारा मुश्किल है, नामुमकिन ये मंजूर नहीं
पथ पर बढ़ते राही से है अब मंज़िल बहुत दूर नहीं।

ग़म पीकर भी डटे रहना यही उत्तम मानव का काम है
चलते रहना दरिया की तरह मत देखो कहां आराम है।

अपने अंदर अपने सारे गम को तुम दबा डालो
गर मिल जायें खुशियां तो जमाने में बिछा डालो।

जीवन एक अमानत है, इसे व्यर्थ नहीं गंवाना है।
आखिर इसी अमानत को हमें एक दिन लौटाना है।

गति तुम्हारी मंद हो और सफ़र तुम्हारा जारी हो
जीवन के इस पथ पर यूँ चल रही तुम्हारी गाड़ी हो।

किस्मत पर रहने वालों का कोई जमाना नहीं होता है
यहां वीरों के लिए धरा पर कोई बहाना नहीं।

प्रशांत कुमार पिंटू

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें



हमारे पथ प्रदर्शक

शिक्षक ज्ञान का दीपक हैं जलाते,
जीवन जीने की राह बतलाते।

मेहनत का हमें महत्व वो समझातें,
सपनों को साकार करवाते।

अच्छे-बुरे की पहचान कराते,
सच्चा इंसान बनना हमें सिखलाते।

ज्ञान का वो प्रकाश फैलाते,
जीवन में आगे बढ़ना सिखाते।

धैर्य व साहस से जीना समझाते,
कठिनाइयों से लड़ना बतलाते।

अनुशासन का वें पाठ पढ़ाते,
इसलिए वे पथ-प्रदर्शक कहलाते।

आशीष अम्बर
उत्क्रमित मध्य विद्यालय धनुषी
केवटी, दरभंगा, बिहार

इसको ऑडियो सुनने के लिए QR Code को स्कैन करें



पद्यपंकज

आपके द्वारा दिया गया अमूल्य समय हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि आपके पास कोई सुझाव हो, तो कृपया हमें अवगत कराएं, जिससे हम और भी बेहतर कार्य कर सकें।

Reg. No. BR/2025/0487469

Teachers Of Bihar

क्या आप बिहार के सरकारी विद्यालय के शिक्षक हैं ? आपको अपनी रचना भी प्रकाशित करनी है ? नीचे दिए गए वेबसाइट, ईमेल एवं व्हाट्सप्प के माध्यम से जुड़े |

writers.teachersofbihar@gmail.com
padyapankaj.teachersofbihar.org
+91 7250818080 | +91 9650233010

पद्यपंकज के सभी अंकों को पढ़ने के लिए QR Code को स्कैन करें